विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2558, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 6 दिसंबर, 2014 वर्ष 44 अंक 6

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

अप्पमत्तो पमत्तेसु, सुत्तेसु बहुजागरो।
अबलस्संव सीघस्सो, हित्वा याति सुमेधसो॥

धम्मपद- २९, अप्पमादवग्गो.

प्रमाद करने वालों में अप्रमादी (क्षीणाश्रव) तथा (अज्ञान की नींद में) सोये लोगों में (प्रज्ञा में) अतिसचेत उत्तम प्रज्ञा वाला (दूसरों को) पीछे छोड़ कर (ऐसे आगे निकल जाता है) जैसे शीघ्रगामी अश्व दुर्बल अश्व को।

"तिपिटक में सम्यक सम्बुद्ध" की भूमिका

८३६ पृष्ठों और छह भागों में छपी पुस्तक **"तिपिटक में सम्यक सम्बुद्ध"** (जो १९९५ में दो भागों में छपी थी) वस्तुतः विशाल तिपिटक की भूमिका ही है। लंबी भूमिका है जिसे पाठकों की पठन-सुविधा के लिए छह भागों में प्रकाशित किया गया है। इसके लिए एक छोटी-सी भूमिका और लिखनी आवश्यक समझी गयी। इसी के परिणामस्वरूप ये चंद शब्द हैं।

सुत्तन्तेसु असन्तेसु, पमुट्ठे विनयम्हि च।
तमो भविस्सति लोके, सूरिये अत्थङ्गते यथा॥

– धर्मसूत्र विद्यमान न रहने पर और धर्मपालन विस्मृत हो जाने पर संसार में सूर्यास्त सदृश अंधकार छा जाता है।

सुत्तन्ते रक्खिते सन्ते, पटिपत्ति होति रक्खिता।
पटिपत्तियं ठितो धीरो, योगक्खेमा न धंसति॥

(अङ्गुत्तरनिकाय अट्ठकथा १.१.१३०, दुतियपमादादिवग्गवण्णना)

– धर्मसूत्र सुरक्षित रहने पर प्रतिपत्ति यानी साधना का प्रतिपादन सुरक्षित रहता है। प्रतिपादन में लगा हुआ धीर व्यक्ति योगक्षेम से वंचित नहीं होता है।

लगभग चालीस वर्ष पूर्व सितंबर, १९५५ में जब मैंने पहली बार परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के चरणों में बैठ कर विपश्यना के शिविर में भाग लिया तब यह देख कर सुखद आश्चर्य से अभिभूत हो उठा कि भगवान बुद्ध का यह प्रयोगात्मक प्रशिक्षण कितना निर्मल है, निर्दोष है! कितना निश्छल है, निष्कलंक है! कितना सार्वजनीन है, सार्वभौमिक है! कितना सार्वकालिक है, सनातन है और कितना वैज्ञानिक तथा आशुफलदायी है!

बचपन से यही सुनता और मानता आया था कि भगवान बुद्ध ईश्वर के नौवें अवतार हैं। इसलिए हमारे लिए पूज्य हैं, अतः भगवान बुद्ध के प्रति सहज श्रद्धा थी। घर के बड़े बुजुर्गों के साथ मांडले (बर्मा) में भगवान बुद्ध के महामुनि मंदिर में जाकर उनकी प्रतिमा के शांत, सौम्य, स्निग्ध चेहरे का दर्शन कर, सादर नमन करना तथा अत्यंत भक्तिभाव से फूल चढ़ाना और दीप जलाना बहुत प्रिय लगता था। परंतु साथ-साथ बचपन में ही मानस पर यह भी एक लेप लगा दिया गया था कि भगवान बुद्ध परम पूज्य और प्रणम्य हैं तो भी उनकी शिक्षा हमारे लिए ग्राह्य नहीं है। यह मान्यता कितनी मिथ्या साबित हुई।

अवश्य ही किसी पुराने पुण्य का फलोदय हुआ जिसके कारण ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हुई कि दस दिन के लिए मां विपश्यना की सुखद गोद में जा बैठा। काम, क्रोध और अहंकार के अंतस्ताप से सतत तापित, संतापित रहने वाले मानस को दस दिनों में ही जो शांति प्राप्त हुई, उससे हर्ष-विभोर हो उठा। शिविर में सम्मिलित होने के पूर्व परम पूज्य गुरुदेव ने विपश्यना विद्या की जो रूपरेखा समझायी, वह बड़ी निर्दोष लगी। फिर भी बचपन से लगे हुए पुराने लेपों के कारण मन में कुछ झिझक थी ही। परंतु दस दिन पूरे होने पर यह देख कर मन बड़ा प्रसन्न, संतुष्ट हुआ कि इस मार्ग में कहीं कोई दोष है ही नहीं। विपश्यना का सारा पथ सर्वथा निष्कलुष और निर्दोष है। अतः गृहस्थ हों या संन्यासी सबके लिए सर्वथा ग्राह्य है, उपयोगी है।

भगवान बुद्ध की ऐसी निर्दोष शिक्षा के प्रति मन में जो अनेक मिथ्या भ्रांतियां थीं, उनका निराकरण हुआ। आखिर शील-सदाचार का जीवन जीने में क्या दोष है भला! सहज स्वाभाविक सांस के आवागमन के प्रति सजग रहते हुए चित्त को एकाग्र कर समाधिस्थ हो जाने में क्या दोष है भला! शरीर और चित्त के पारस्परिक प्रभाव-क्षेत्र का यथाभूत दर्शन करते हुए अंतर्मन की गहराइयों में विकारों के तथा तज्जन्य व्याकुलता के प्रजनन और संवर्धन का निरीक्षण करते हुए इस प्रपंच के प्रति अनित्यबोधिनी प्रज्ञा जगा लेने में क्या दोष है भला! इस अनुभवजन्य प्रज्ञा के आधार पर समता में स्थित होकर मन को विकार-विमुक्त बना लेने में तथा यों निर्मलचित्त हुए साधक द्वारा इंद्रियातीत नित्य, शाश्वत, ध्रुव अवस्था का साक्षात्कार कर सकने की क्षमता प्राप्त कर लेने में क्या दोष है भला! इस निर्दोष पथ पर उठाया हुआ हर कदम कल्याणकारी है।

एक धर्मभीरु परिवार में जन्मा और पला, इस कारण खूब समझता था कि शील-सदाचार का पालन अवश्य करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक मनोबल बढ़ाने की विधि इस शिविर में सीखी। चित्त की एकाग्रता और विकार-विमुक्ति का लक्ष्य तो पहले भी था पर इसे पूरा कर सकने का सहज सरल मार्ग इस विधि ने प्रशस्त किया। प्रज्ञा के बारे में बहुत पढ़ा था, बहुत चिंतन-मनन भी किया था परंतु इससे जो लाभ मिलना चाहिए, उससे वंचित था। प्रज्ञा का सही अर्थ ही नहीं समझ पाया था तो लाभ मिलता भी कैसे? अब तक तो परोक्ष ज्ञान को ही प्रज्ञा समझ रहा था। सुना-सुनाया, पढ़ा-पढ़ाया ज्ञान वस्तुतः श्रुत-ज्ञान होता है, जिसे श्रद्धा द्वारा स्वीकार किया जा सकता है। चिंतन-मनन करके उसे युक्ति-युक्त मान लें तो वही चिंतन-ज्ञान हो जाता है। पर ये दोनो ही परोक्ष ज्ञान हैं, पराये ज्ञान हैं। स्वानुभूति के स्तर पर प्रत्यक्ष ज्ञान हो तो ही प्रज्ञान है। यही प्रज्ञा है। विपश्यना द्वारा इसी प्रत्यक्ष ज्ञान का अभ्यास किया। इस अभ्यास की निरंतरता कैसे बनाये रखें, यह भी सीखा। इस निरंतरता में पुष्ट होना ही प्रज्ञा में स्थित होना है, यह भी खूब

समझ में आया। तब ऐसे लगा कि जिस स्थितप्रज्ञता को अपने जीवन का आदर्श मान रखा था, वह तो केवल एक सैद्धांतिक बात थी। बहुत हुआ तो उस पर चिंतन-मनन कर लिया। परंतु वह भी मात्र बौद्धिक प्रक्रिया ही हुई। विपश्यना ने प्रज्ञा के व्यावहारिक पक्ष का प्रयोगात्मक मार्ग प्रशस्त किया। प्रज्ञा के बल पर वीतराग, वीतद्वेष, वीतमोह, वीतभय होने के व्यावहारिक पक्ष का प्रयोगात्मक मार्ग प्रशस्त किया। विपश्यना कोरा उपदेश नहीं है, कोरा चिंतन-मनन नहीं है, बल्कि मनोविकारों को जड़ से उखाड़ देने की व्यावहारिक प्रक्रिया है, इसका स्पष्ट अनुभव हुआ।

पहले ही शिविर में शील, समाधि और प्रज्ञा के विशुद्ध सुधारस का जो यत्किंचित स्वाद चखा और उससे जो आंतरिक प्रश्रब्धि और प्रशांति की अनुभूति हुई उससे मन में एक धर्म-संवेग जागा कि चित्त विशुद्धि की इस कल्याणी साधना के अभ्यास को पुष्ट करते हुए, इसके सैद्धांतिक पक्ष से भी अवगत होना चाहिए। अतः बुद्ध-वाणी पढ़ने का निश्चय किया। परंतु वह लगभग पंद्रह हजार पृष्ठों के विशाल साहित्य में निहित थी, सो भी पालिभाषा में, जिसका मुझे रंचमात्र भी ज्ञान नहीं था। सौभाग्य से महापंडित राहुल सांकृत्यायनजी, भिक्षु आनंद कौसल्यायनजी, भिक्षु जगदीश काश्यपजी, भिक्षु धर्मरत्नजी तथा भिक्षु धर्मरक्षितजी ने बुद्ध-वाणी के कुछ ग्रंथों के हिंदी अनुवाद कर दिये थे। उन्हें भारत से मँगा कर पढ़ना आरंभ किया। पढ़ते हुए बड़ा आह्लाद होता था, विपश्यना साधना को बड़ा बल मिलता था।

सन १९६२ से ६४ के बीच एक और महान पुण्य का फलोदय हुआ जिसके कारण व्यवसाय और उद्योग के संचालन-संबंधी उत्तरदायित्व से सर्वथा मुक्ति मिली। अब जीवन में अवकाश ही अवकाश था। सन १९६९ तक बुद्ध-वाणी के हिंदी अनुवाद को ही नहीं, बल्कि मूल पालि के भी कुछ सूत्रों को पढ़ सकने का अवसर प्राप्त हुआ। मूल पालि में इन सूत्रों को पढ़ते समय अत्यंत प्रीति-प्रमोद जागता था; तन-मन पुलक-रोमांच से भर उठता था। सामान्यतया पालिभाषा बहुत सरल लगी, प्रिय लगी और प्रेरणा-प्रदायक भी। उन सूत्रों की परम पूज्य गुरुदेव द्वारा की गयी व्याख्या का मन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा और उस व्याख्या के आधार पर विपश्यना साधना का अभ्यास करते हुए जो अनुभव हुआ, वह अद्भुत था, अपूर्व था। परियत्ति याने बुद्ध-वाणी, और प्रतिपत्ति याने उसके सक्रिय अभ्यास, के पावन संगम के कारण धर्म का शुद्ध स्वरूप अधिक उजागर होता गया। इस अमृत-सागर में गोते लगाते हुए देखा कि विपश्यना का पथ अत्यंत शुद्ध है, पवित्र है, सुख-शांति प्रदायक है; जात-पांत के भेदभाव से, सांप्रदायिक बाड़ेबंदी से, उलझाने वाली दार्शनिक मान्यताओं से और थोथे कर्मकांडों से सर्वथा मुक्त है। इस पथ पर उठाया गया हर कदम हर किसी व्यक्ति के लिए यहीं इसी जीवन में विकार-विमुक्ति के सुखद परिणाम देने वाला है।

मुझे लगा कि कल्याणी बुद्ध-वाणी और भगवती विपश्यना को खोकर हमारे देश ने अपनी एक अत्यंत गौरव, गरिमामय पुरातन अध्यात्म-विद्या खो दी। शुद्ध सनातन आर्य-धर्म खो दिया। भारत के उन ऐतिहासिक महापुरुष को खो दिया जो नितांत निश्छल थे, निष्कपट थे, निष्प्रपंच थे, निष्कलुष थे; जो अनंत मैत्री और करुणा के साक्षात अवतार थे। एक ऐसे महामानव को खो दिया जो केवल भारत में ही नहीं बल्कि सकल विश्व में अनुपम थे, अनुत्तर थे, अप्रतिम थे, अद्वितीय थे, असदृश थे; जिनकी पावन शिक्षा के कारण भारत वस्तुतः विश्व-गुरु बना; भारत की भूमि विश्व के करोड़ों लोगों के लिए पूजनीय तीर्थभूमि बनी। उन भगवान गौतम बुद्ध को और उनकी कल्याणी वाणी तथा दुःख-विमोचनी विपश्यना विद्या को पुनः प्रकाश में लाना हमारे लिए सर्वथा लाभप्रद ही लाभप्रद है।

लगभग २००० वर्षों के लंबे अंतराल के बाद सौभाग्य से सन् १९६९ में विपश्यना का भारत में पुनरागमन हुआ है। भारत के प्रबुद्ध लोगों ने इसे सहर्ष स्वीकार किया है। साधकों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। देखता हूं कि विपश्यना शिविरों में सम्मिलित होने वाले अनेक साधक भगवान बुद्ध के मूल उपदेशों से अवगत होना चाहते हैं। मैं उनकी इस धर्म जिज्ञासा को खूब समझ सकता हूं, क्योंकि मैं स्वयं इस अवस्था में से गुजरा हूं। यह भी समझता हूं कि आज के भारत में पालिभाषा में बुद्ध-वाणी उपलब्ध नहीं है। नव नालंदा महाविहार ने लगभग पैंतीस वर्ष पूर्व जो प्रकाशन किया था, वह अब सर्वथा अनुपलब्ध है। परंतु यह प्रसन्नता की बात है कि विपश्यना विशोधन विन्यास ने न केवल बुद्ध-वाणी बल्कि उसकी अर्थकथाओं, टीकाओं और अनुटीकाओं के संपूर्ण पालि-साहित्य के प्रकाशन का बीड़ा उठाया है। लेकिन सभी साधक तो पालि पढ़ नहीं पायेंगे। हिंदी भाषी साधकों के लिए हिंदी अनुवाद आवश्यक है। जो अनुवाद पहले हुए थे, दुर्भाग्य से उनमें से भी अधिकांश अब उपलब्ध नहीं हैं। विपश्यना विशोधन विन्यास की एक योजना पुरातन पालि साहित्य के हिंदी अनुवाद करने की भी है, परंतु उसमें बहुत समय लगेगा।

अतः अपनी सामर्थ्य-सीमा को जानते हुए भी तिपिटक की एक बृहद भूमिका लिखने का साहस किया जिससे साधकों को हिंदी भाषा में भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा के बारे में अधिक से अधिक और सही-सही जानकारी मिल सके। पालि तिपिटक में से कुछ उद्धरणों और प्रेरक प्रसंगों को एकत्र करने लगा। जानता हूं कि आज के अधिकांश साधकों की वही अवस्था है जो १९५५ में मेरी थी। भगवान बुद्ध और उनकी पावन शिक्षा के बारे में उनका ज्ञान अत्यल्प है और भ्रामक भी। उन भ्रांतियों को दूर करने के लिए मूल पालि में सुरक्षित बुद्ध-वाणी का ही आश्रय लेना आवश्यक है। पालि भाषा ही हमें भगवान बुद्ध के अत्यंत समीप पहुँचाती है, क्योंकि यही उनकी मातृभाषा कोशली थी जो कि तत्कालीन विस्तृत और शक्तिशाली कोशलदेश की जनभाषा होने के कारण उस सारे मध्यदेश में बोली और समझी जाती थी जो कि भगवान बुद्ध की चारिका भूमि रही। कालांतर में इसे सम्राट अशोक ने अपने प्रशासन और धर्मलेखों के लिए अपना लिया और क्योंकि उसकी राजधानी पाटलिपुत्र मगध में थी और कोशलप्रदेश भी मगध साम्राज्य में समा गया था, अतः यही कोशली भाषा मागधी कहलायी जाने लगी। इसने भगवान बुद्ध की वाणी को पाल-सँभाल कर रखा, इसलिए पालि कहलायी।

इसमें सुरक्षित भगवद् वाणी में सर्वत्र भगवान बुद्ध का कल्याणकारी धर्मकायिक व्यक्तित्व समाया हुआ है, उनके द्वारा प्रवाहित धर्म की अमृत-वाणी का कलकल निनाद समाया हुआ है, उनकी वाणी से प्रभावित होकर और उनके बताये मार्ग पर चल कर निहाल हुए गृह-त्यागियों और गृहस्थों के आदर्श जीवन का भव्य दर्शन समाया हुआ है जो कि साधकों के लिए प्रभूत प्रेरणा-प्रदायक है।

तिपिटक में उनसे संबंधित प्रेरक सामग्री इतनी अधिक मात्रा में है कि कोई कितना भी चयन करे, तृप्ति हो ही नहीं पाती, वैसे ही जैसे कि भगवान बुद्ध के जीवनकाल में उनके गृहस्थ शिष्य हत्थक आलवक ने कहा कि –

"भगवान, मैं आपका दर्शन करते-करते अतृप्त ही रहा।"

"भगवान, मैं आपकी वाणी सुनते-सुनते अतृप्त ही रहा।"

तिपिटक भिन्न-भिन्न प्रकार के सुंदर और सुरभित पुष्पों का एक बृहद मनोरम उद्यान है। मैंने उनमें से थोड़े फूल चुन कर उन्हें माला में गूंथने का प्रयत्न किया है। कहीं-कहीं अर्थकथाओं में से

बुद्धपुत्रों की वाणी के भी इक्के-दुक्के नयनाभिराम सुमन लेकर गूंथ लिए हैं। यह सब वैसे ही हुआ जैसे कि भगवान बुद्ध के गुणों का गान करते हुए भावविभोर गृहपति उपालि ने कहा था –

सेय्यथापि, भन्ते, नानापुप्फानं महापुप्फरासि

– जैसे कि, भंते, नाना प्रकार के पुष्पों की एक महती पुष्प-राशि हो,

तमेनं दक्खो मालाकारो वा मालाकारन्तेवासी वा

– जिसे लेकर कोई दक्ष माली अथवा उस माली का अंतेवासी शिष्य,

विचित्तं मालं गन्थेय्य – सुदर्शिनी माला गूंथे।

एवमेव खो, भन्ते, सो भगवा अनेकवण्णो, अनेकसतवण्णो

– इसी प्रकार, भंते, वे भगवान अनेक प्रशंसनीय गुणवाले हैं, अनेक सौ प्रशंसनीय गुण वाले हैं।

को हि, भन्ते, वण्णारहस्स वण्णं न करिस्सति?

(मज्झिमनिकाय २.७७, उपालिसुत्त)

– भंते, प्रशंसनीय की प्रशंसा कौन नहीं करेगा? गुणवंतों के गुण कौन नहीं गायेगा?

उन्हीं गुणवंत भगवान के, उनके सिखाये धर्म के, उस धर्म को धारण कर निर्मल-चित्त हुए संतों के गुण गाने की चाह मेरे भीतर भी जागनी स्वाभाविक थी।

इसी भाव में बुद्ध-वाणी के कुछ एक सुंदर सुरभित सुमनों को चुन-चुन कर यह माला गूंथी गयी है; सद्धर्म के अगाध रत्नाकर से कुछ एक अनमोल रत्न चुन-चुन कर यह रत्न-खचित आभूषण गढ़ा गया है; सद्धर्म के असीम सुधा-सागर में से अमृत की कुछ एक बूंदें लेकर धर्म-सुधा-रस की यह गगरी भरी गयी है।

नित्य पठनीय यह पुस्तक-माला भगवान के बारे में निरूपित इस विरुद-- **इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरण सम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति;** आदि गुणों का हिंदी निरूपण है।

कंप्युटर तथा कुछ साधकों के सहयोग से छहों भागों के अंत में दी गयीं प्रयुक्त शब्दों की अनुक्रमणिकाएं छपी हैं यथा --

-- हिंदी शब्दानुक्रमणिका, -- पालि शब्दानुक्रमणिका,
-- संदर्भ सूची, -- नामों की अनुक्रमणिका आदि; ये

शोध विद्यार्थियों तथा जिज्ञासुओं के लिए बहुत उपयोगी हैं।

यह सुंदर सुरभित सुमनों की माला, यह महर्घ रत्नजड़ित स्वर्णाभूषण, यह शांतिप्रदायिनी सुधारस-गगरी, विपश्यी साधकों को तथा अन्यान्य शांतिप्रेमी पाठकों को धर्मपथ पर आरूढ़ होने और उत्तरोत्तर आगे बढ़ते रहने के लिए –

प्रभूत प्रेरणा का कारण बने!
उनके अपरिमित हित-सुख का कारण बने!
उनके असीम मंगल-कल्याण का कारण बने!
उनकी स्वस्ति-मुक्ति का कारण बने!
यही कल्याण कामना है।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

(बुद्ध जयंती, १९९५)

दीपावली नव-वर्ष १९९५ के प्रश्नोत्तर

प्रश्न- सत्कर्म का ज्ञान हो गया पर अमल नहीं हो पाता, मन पर दृढ़ता नहीं रहती। आलस्य और लोभ मन में हैं।

उत्तर- जो ज्ञान हो गया वह केवल बुद्धि के स्तर पर हो गया। अनुभूति के स्तर पर ज्ञान शुरू हो जायगा तो बल प्राप्त होना शुरू होगा। मन में दृढ़ता आयेगी। अब हमको हर अवस्था में समता में स्थापित रहना है। यह दृढ़ता अनुभूतियों के स्तर पर आये। और विपश्यना करते रहेंगे, समझदारी के साथ में करते रहेंगे तो अपने आप दृढ़ता आयेगी ही।

प्रश्न- व्यावहारिक जगत में बचपन से ही बच्चों को नमन और प्रार्थना के जरिये संप्रदाय और ईश्वर के प्रति श्रद्धा सिखायी जाती है।

उत्तर- कोई बुरी बात नहीं है। क्या हुआ, किसी को किसी ईश्वर के प्रति श्रद्धा जागी, किसी देवी-देवता के प्रति श्रद्धा जागी। अब उसको सिखाना यह है कि क्यों श्रद्धा जागी? इसको देवता क्यों मानते हो? इसको देवी क्यों मानते हो? इसको ईश्वर क्यों मानते हो? इसमें कोई सद्गुण है। अगर सद्गुण नहीं है, दुर्गुण ही दुर्गुण है तो हमारी श्रद्धा का भाजन कहां हुआ? काहे श्रद्धा करें उस पर? सद्गुण ही सदगुण हैं तो भाई, ऐसे सद्गुण मुझमें भी आने चाहिए ना? हम जिसको जगत-पिता कहें, जिसको जगत-माता कहें वे हमारे पिता हुए, हमारी माता हुई। किसी की भी माता, किसी का भी पिता कब खुश होगा, जब कि बच्चे में वे सद्गुण आयें जो कि माता-पिता में है। वे सद्गुण बच्चे में आयें नहीं और माता-पिता को खुश करना चाहे, तो भाई कैसे खुश होंगे माता-पिता। इतनी-सी बात बच्चों को समझाते चलें कि जिस परिवार में, जिस किसी कुलदेवता को मानते हैं, कुलदेवी को मानते हैं, भले कोई ईश्वर को मानते हैं, परमात्मा को मानते है, अल्लाह को मानते हैं... गुण क्या हैं? बस वही धर्म है। वे गुण मुझमें आ रहे हैं कि नहीं? यही धर्म है। बचपन से लोगों को सिखाना शुरू कर दोगे तो बदलता चला जायगा। आगे जाकर अनुभूति करेगा तो खूब समझ में आयेगा कि सत्य ही ईश्वर है, परम सत्य ही परमेश्वर है। और उसका साक्षात्कार होना चाहिए, कोरी बातें नहीं।

प्रश्न- मेरा प्रश्न व्यक्तिगत है। मैं पेशे से वकील हूं। पर डरती हूं कि ये सम्यक आजीविका है क्या? किसी के दुःख से पैसा कमाना सम्यक है? दोनों पक्ष में से मैत्रीभाव रखें तो मुवक्किल के प्रति न्याय-अन्याय कैसे होगा? कृपया समझायें।

उत्तर- बड़ा अच्छा प्रश्न है, व्यावहारिक प्रश्न है। हमारे गुरुजी के सामने एक ऐसा ही वकील आया। उसने साधना की। अब वह कहता है हमारे पास ऐसे ही मुवक्किल हैं जो गलतियां करके आते हैं और हमें कहते हैं कि कानून की कोई ऐसी गुत्थी निकालो कि हम छूट जायँ। और हम अपनी बुद्धि से कोई रास्ता निकालते हैं और वे छूटते हैं। तो बड़ा नाम है उसका। किसी तरह का केस हो वह जीत जायगा, इतना प्रसिद्ध वकील है। तो कहता है अपनी रोजी-रोटी कैसे छोड़ दूं मैं? तो गुरुजी ने कहा, अच्छा तुम केवल सालभर के लिए छोड़ दो। तेरे पास जो भी केस आए - ऐसे भी तो केस आयेंगे जो किसी कानून के चक्कर में उलझ गए, वस्तुतः कसूरवार नहीं है, अपराधी नहीं है उलझ गया। तो अपनी बुद्धि लगा कर उस निरपराध को बचाना है, ऐसे केस ले। ऐसे तो बहुत थोड़े आयेंगे गुरुजी! अच्छा, बहुत थोड़े आयेंगे तो क्या हुआ, ऐसे लेकर तो देख! मान गया। साल भर उसने ऐसे ही केस लिए। अब उसकी ऐसी प्रसिद्धि हो गई कि वह ऐसा केस लेगा ही नहीं जो झूठा है। तो जो सच्चे केस हैं, उसके पास ज्यादा आने लगे। और उसका लिया हुआ ऐसा केस कोर्ट में जायगा तो कभी हारेगा नहीं। हर जज इस बात को जानता है कि यह पहले हिला कर देख लेता है कि कहीं धोखा तो नहीं है। यह सचमुच निरपराध है न! और बेचारे को कहीं फँसाया जा रहा है। अब वह केस लेगा और लड़ेगा और हर हालत में जीतेगा। उसका काम पहले जितना चलता था उससे ज्यादा चलने लगा। अरे भाई, धर्म मदद करेगा ही। हममें अपना साहस होना चाहिए। *खूब मंगल हो।... (प्रश्नोत्तर क्रमशः...)*

विभिन्न स्थानों पर आचार्य स्वयं-शिविर संपन्न

पूज्य माताजी के साथ कई विपश्यना केंद्रों पर लगे आचार्य स्वयं-शिविरों की सफलता के समाचार प्राप्त हुए हैं। इनसे न केवल साधकों को प्रभूत लाभ प्राप्त हुआ बल्कि केंद्रों को भी धर्म की तीव्र तरंगों का लाभ हुआ। सबका मंगल हो!

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

पालि प्रशिक्षण कार्यक्रम- २०१५, विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल विपश्यना पगोडा, मुंबई

१. एक महीने का निवासीय सघन **पालि-हिंदी** पाठ्यक्रम-- १० जनवरी से १२ फरवरी;
२. उच्च पालि-व्याकरण कार्यशाला -- १३ से १७ फरवरी;
३. पालि पढ़ना-लिखना सीखना (-- बरमी, रोमन एवं देवनागरी में) -- १० से १९ मई;
४. **पालि-अंग्रेजी** सघन निवासीय पाठ्यक्रम -- २५ मई से ९ अगस्त;
५. अनुवाद-कार्य के लिए कार्यशाला -- १० से १७ अगस्त;
६. अशोक के शिलालेख एवं बरमी लिपि कार्यशाला -- १ से ५ अक्टूबर;
७. उच्च पालि-व्याकरण कार्यशाला -- ३ से १४ नवंबर;
८. शोध-प्रणाली पर कार्यशाला -- १५ ले १९ नवंबर;

इन कार्यक्रमों में भाग लेने की पात्रता (योग्यता)--

अ) जिन्होंने कम-से-कम **तीन** १०-दिवसीय एवं **एक** सतिपट्ठान शिविर किया हो।
ब) स्नातक डिग्री या १५ वर्ष तक स्कूली पाठ्यक्रम पूरा किया हो।
स) अनुवाद और पालि-व्याकरण के लिए-- जिन्होंने वि.वि.वि. द्वारा संचालित निवासीय पालि-पाठ्यक्रम पूरा किया हो अथवा पालि में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की हो।

विन्यास ने निम्न विषयों पर शोध का आयोजन किया है--

१. संत वाणी में विपश्यना; २. तिपिटक में आयुर्वेदिक तत्त्व;
३. विपश्यना से बदलाव-- तब और अब;

यदि किसी ने इन विषयों पर कुछ काम किया हो तो उनका स्वागत है।
संपर्क-- ईमेल- mumbai@vridhamma.org; फोन- +91-22-33747560.

मंगल मृत्यु

महासमुद, छत्तीसगढ़ के सहायक आचार्य ८० वर्षीय श्री ब्रह्मानंद गोयल ने २००० से सहायक आचार्य के रूप में जेलों आदि सहित अनेक शिविरों का संचालन किया। वे पिछले कुछ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे और १६ नवंबर की रात में उन्होंने शरीर त्याग दिया। अपनी सेवाओं के बल पर दिवंगत का मंगल ही होगा। धर्म परिवार की ओर से श्रद्धांजलि एवं मंगल मैत्री।

सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में एक-दिवसीय महाशिविर

18 जनवरी २०१५ को 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' में एक दिवसीय महाशिविर होगा। शिविर-समयः प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक. 3 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपोसुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्कः** 022-28451170 022-337475-01/43/44- Extn. 9, **(फोन बुकिंग : 11** से **5** बजे तक, प्रतिदिन)
Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

आचार्य

1-2. Mr. Ittiporn & Mrs. Monta Thong-innate, To serve as centre teachers for Dhamma Suvanna, Thailand.
3. Dr. Amnat Aplichatvulop, To serve as centre teachers for Dhamma Puneti, Thailand.

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री सुनील एवं श्रीमती विद्या बागडे, धम्म भण्डार, भंडारा के लिए केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री एस.पी. शर्मा, जयपुर
२. कु. शशि कमल, जयपुर
3. Mr. Yuth Itchayapruek, Thailand
4. Ms. Sa-nguanwong Khaowisoot, Thailand

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१.श्री किशोर नातू, इगतपुरी
२. श्री अनिल माली, जलगांव
३. त्र्यंबक तायडे, मुंबई
4. Ms. Usana Patramontree, Thailand
5. Ms. Sirinart Nartwong, Thailand

बालशिविर-शिक्षक

१. श्रीमती अर्चना भूतड़ा, औरंगाबाद
२. श्री दिनेश खोब्रागडे, भिलाई
३. श्रीमती नयना भालेराव, जलगांव
४. श्री भारती अरुण थोके, जलगांव
५. श्री शामसुंदर टेम्भारे, जलगांव
६. श्री रविकांत वासनिक, जलगांव
७. श्रीमती आशा सूद, जलगांव
८. श्रीमती मालती ई. गायकवाड,जल''
9. Mr. Renzo Conedera, Italy
10. Mr. Chi Tran, Australia

दोहे धर्म के

रूप शब्द रस रति जगे, गंध स्पर्श प्रिय होय।
पर चाखे जब धर्म रस, सब रस नीरस होय॥
जो भी चाखे धर्म रस, मंद पड़े दुख द्वंद्व।
प्यास बुझे, प्रजलन मिटे, चित्त भरे आनंद॥
धरम चाख मन मुदित हो, अणु-अणु पुलकित होय।
धरम बांट मन मुदित हो, जन-जन हर्षित होय॥
सत्य न दूजा हो सके, सत्य सनातन एक।
बिन दर्शन बिन ज्ञान के, कल्पित हुए अनेक॥
मन में उठे विकार जब, अभिमुख होकर देख।
देखत-देखत देखते, मिटे दुखों की रेख॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

कितना दिन यूं ही गया, करतां बाद-बिवाद।
त्याग तरक नै बावळा, चाख धरम रो स्वाद॥
कहतो सुणतो ही रह्यो, कर्‌यो नहीं ब्यवहार।
कथणो सुणनो तो हुयो, अब करणी री बार॥
आंख्यां पाटी बांधकर, मोल कर्‌यो ना तोल।
तूं तेली रै बैल सो, फिर्‌यो गोळ ही गोळ॥
अंतर सोधन छोड कर, पोथ्यां ढूंढै ग्यान।
सार हाथ आवै कठै? कित भटक्यो नादान?
थोथै बुद्धिबिलास मँह, जीवन देतो खोय।
जदि हिवड़ै ना जागती, सुद्ध धरम री लोय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६,
अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2558**, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 6 दिसंबर, 2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)